मूल्य
50/-

राष्ट्रीय मासिक
• वर्ष-15 • अंक-06 • जनवरी 2022 ISSN: 2582-4392
www.krishiworld.in

कृषि वर्ल्ड

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ विशेष

कृषि, पंचायत, सहकारिता, पशुपालन, मत्स्यकी, ग्रामोद्योग, ग्राम विकास, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी समाचारों पर आधारित

प्याज की वैज्ञानिक खेती कैसे करें

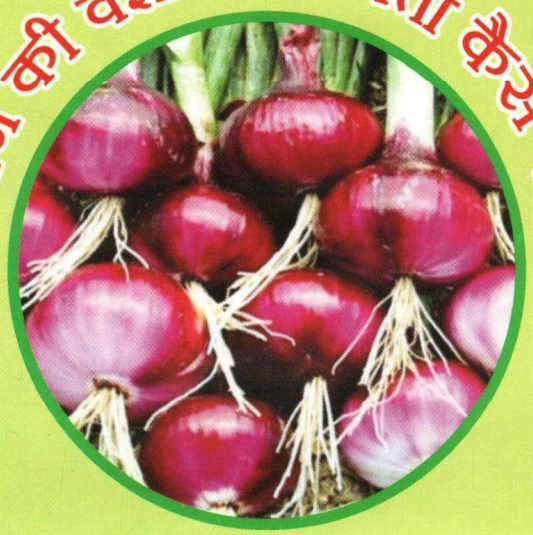

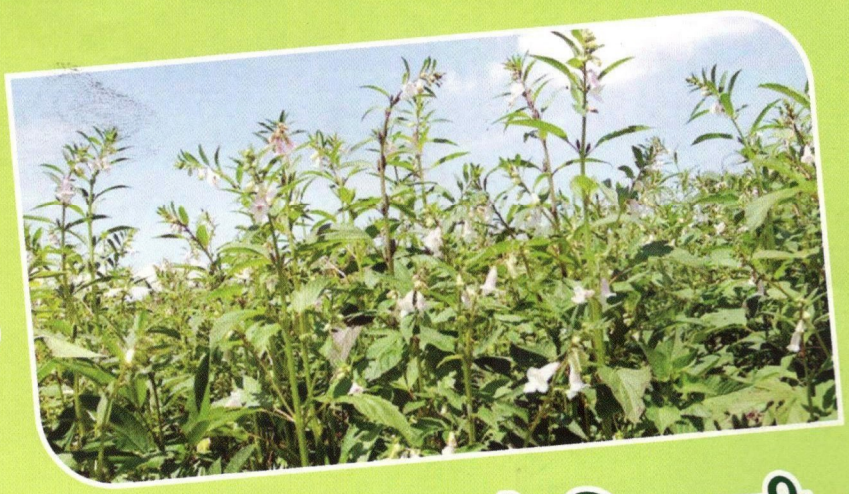

फरवरी में करें तिल की बुआई, नहीं लगेगा रोग

जैविक खेती की ओर आगे बढ़ता छत्तीसगढ़...

•POSTAL REGN NO.- C.G./RYPDN/35/2022-24 •RNI NO.- CHHHIN/2007/19918 •www.facebook.com/editor.krishiworl

ग्रीष्मकालीन धान में तना छेदक कीट-जानकारी एवं नियंत्रण

• **डॉ. पी मूवेंथन, उत्तम सिंह, सतीश खाखा, रेवेंद्र साहू एवं मनोज कुमार**
भाकृअनुप-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरोंडा, रायपुर

तनाछेदक कीट विश्वस्तर पर धान का सबसे गंभीर कीट है तथा छत्तीसगढ़ में भी इसका प्रकोप सभी क्षेत्रो में देखा जा सकता है, धान ही इसका मुख्य भोजन है तथा यह धान को 30 प्रतिशत क्षति पहुँचाता है यह कीट फसल को नर्सरी अवस्था से लेकर परिपक्व अवस्था तक हानि पहुँचाता है। इस कीट के इल्ली (लार्वा) फसल के किसी भी अवस्था में तना में घुसकर उसे काट देता है, जिससे पौधे का तना और पत्ती सुखा हुआ दिखाई देता है। तथा इससे प्रभावित पौधे की बालियाँ सफेद दिखाई देती है जिसे डेडहार्ट कहते हैं, जिसमें दाने नहीं होते और खींचने पर आसानी से अलग हो जाते है, इस कीट का प्रकोप जुलाई से नवम्बर माह तक देखा जाता है। इस कीट का इल्ली ही धान को नुकसान पहुंचाता है, और ज्यादातर कीट फसल की शुरूवाती अवस्था में पौधे को अपना शिकार बना लेता है।

जीवन चक्रः- तनाछेदक के सफल नियंत्रण के लिए इसके जीवन चक्र को समझना अति आवश्यक है जिससे हम समय पर इसकी रोकथाम कर सकें और अपने फसल को सुरक्षित रख सकें।

यह कीट अप्रैल से अक्टुबर माह तक सक्रिय रहता है तथा पूर्ण रूप से विकसित इल्ली धान के ठुंठ मे नवम्बर से मार्च तक सुप्तावस्था में रहता है, तथा मार्च में इसका कोषा अवस्था प्रारंभ होता है और अप्रैल के शुरूवात में इसमें से शलभ (तितली) निकलना प्रांरभ हो जाता है। तदोपरांत शलभ सक्रिय हो जाते हैं तथा समागम (जनन) के पश्चात् पत्ती के निचले भाग में 120-150 अण्डे देती है,जो 2-5 के समुहों में होते हैं तथा प्रत्येक समुह में 60-100 अण्डे होते हैं जो पीले भूरे रंग के बाल या रूई से ढके होते है।

अण्डा प्रभावित पौधे डेडहार्ट- अण्डे 6-7 दिनों में प्रस्फुटित हो जाता है तथा इनमें से छोटे-छोटे काले सिर वाले इल्ली निकलते है, जो शीघ्र ही पौधे के तने के निचले भाग में छेद बनाकर घुस जाते है और यह 16-27 दिनों तक तना को खाता है, इसके कारण हमें पानी के उपर तने में एक छिद्र दिखाई पड़ता है। जिसे देखने पर उसमें इल्ली दिखाई पड़ता है। यह इल्ली 9-12 दिनों में एक शलभ के रूप में विकसीत हो जाता है। इस कीट का जीवन चक्र 31-46 दिनों में पूर्ण हो जाती है अत: किसान भाई इसके जीवन चक्र को समझकर समुचित निगरानी के माध्यम से इसकी पहचान एवं उचित नियंत्रण उपाय कर सकते हैं।

प्रबंधनः-

1. फसल के ठुंठों को नष्टकर दे जिससे उसमें कीट शरण ना ले सके।
2. 2 ग्राम क्लोरोपायरीफॉस दवा प्रति कि. ग्र. बीज के हिसाब से बीजोपचार करें।
3. निगरानी के लिए फेरोमोन प्रपंच तथा प्रकाष प्रपंच का उपयोग करें जिससे कीट के प्रकोप की स्थिति साफ हो सके।
4. थरहा निकालने के पूर्व कारबोंफ्यूरॉन दवा का 2 कि.ग्र./हे. के हिसाब से उपचार करें।
5. रोपाई से पहले थरहा के उपरी भाग को काटकर नष्ट कर दें ताकि कीट के अण्डे पौधे से अलग हो जाये।
6. नत्रजन उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग न करें, नत्रजन का उपयोग लीफ कलर चार्ट के मिलान के आधार परत था सिफारिश मात्रा के अनुसार करें।
7. रोपाई के 30 दिन बाद ट्राइकोग्रमा जैपोनिकम 1-1.50 लाख प्रति हेक्टेयर प्रति सप्ताह की दर से 2-6 सप्ताह तक ग्रसित खेत में छोड़ना चाहिए यह कीट तनाछेदक के अण्डे को नष्टकर देंगे, इसे ट्राइकोकार्ड के रूप सकतें है।
8. आवश्यकतानुसार दानेदार कीटनाशी जैसे कार्बोफ्यूरान 3जी./25 कि. ग्र./हे., कारटेपहाइड्रोक्लोराईड 4जी./20 कि. ग्र./हे. या क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी 2 एमएल/लीटर, एसीफेट 75 एसपी 2ग्रम/लीटर पानी या क्विनॉलफॉस 25 एसी 2 एम.एल./लीटर, पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

जैविक नियंत्रण सामाग्री जैसे फेरोमोनट्रेप तथा ट्राइकोकार्ड के लिए निम्न संस्थानो से सम्पर्क कर सकतें है।

1. https://nibsm.icar.gov.in
2. www.pestcontrolindia.com
3. www.nbair.res.in
4. www.niphm.gov.in